आर्थर लेविस का आर्थिक वृद्धि का सिद्धान्त
(W. Arther Lewis' Theory of Economic Growth)

पृष्ठभूमि
(Background)

'आर्थिक वृद्धि' के सिद्धान्त की रचना में आर्थर लेविस ने प्रतिष्ठित अर्थ-शास्त्रियों (Classical Economists) की परम्परा का ही अनुसरण किया है। स्मिथ से लेकर मार्क्स तक सभी अर्थशास्त्रियों ने इसी अभिमत की पुष्टि की है कि अर्द्ध-विकसित अर्थव्यवस्थाओं में 'निर्वाह-मजदूरी पर श्रम की असीमित पूर्ति उपलब्ध है।' इन अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक वृद्धि का कारण पूंजी संचय (Capital Accumulation) में खोजने का प्रयत्न किया है। इसकी व्याख्या उन्होंने आय-वितरण के विश्लेषण के रूप में की है। प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों के मॉडलों में 'आय-वृद्धि' (Income-growth) व 'आय-वितरण' (Income-distribution) का विवेचन एक साथ हुआ है। लेविस भी इन अर्थशास्त्रियों की भाँति आर्थिक वृद्धि के अपने मॉडल में यही मान्यता लेकर चलते हैं कि "अर्द्ध-विकसित देशों में निर्वाह-मजदूरी पर असीमित मात्रा में श्रम उपलब्ध है।" लेविस ने अपने मॉडल में दो क्षेत्र लिए हैं—(1) पूंजीवादी क्षेत्र (Capital Sector) व (2) निर्वाह-क्षेत्र (Subsistence Sector)।

परिकल्पना (Hypothesis)

मॉडल में यह परिकल्पना की गई है कि आर्थिक वृद्धि पूंजी संचय का फलन है और पूंजी संचय तब होता है जब श्रम को निर्वाह-क्षेत्र से स्थानान्तरित करके पूंजीवादी क्षेत्र में प्रयुक्त किया जाता है। पूंजीवादी क्षेत्र पुनः उत्पादित होने वाली पूंजी (Reproducible Capital) का प्रयोग करता है, जबकि निर्वाह-क्षेत्र में इस प्रकार की पूंजी प्रयुक्त नहीं होती तथा इस क्षेत्र में प्रति व्यक्ति प्रदा (Per Capita Output) पूंजीवादी क्षेत्र की अपेक्षा कम होता है।

मॉडल की सैद्धान्तिक संरचना
(Theoretical Frame-work of the Model)

लेविस के मॉडल का मुख्य केन्द्र-बिन्दु इस तथ्य की विवेचना करना है कि प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों के मूल सैद्धान्तिक ढाँचे में रहते हुए, वितरण, संचय व विकास से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान किस प्रकार सम्भव है। इन समस्याओं का विवेचन बन्द एवं खुली दोनों प्रकार की अर्थव्यवस्थाओं में किया गया है।

Scanned by CamScanner

(i) बन्द अर्थ-व्यवस्था (Closed Economy)—बन्द अर्थ-व्यवस्था से सम्बन्धित मॉडल का प्रारम्भ लेविस इस मान्यता से करते हैं कि निर्वाह-मजदूरी पर श्रम की पूर्ति पूर्णतः लोचदार (Infinitely Elastic) होती है। वे इस कथन को विश्व के सभी भागों में क्रियाशील मानकर नहीं चलते हैं। इस मान्यता की क्रियाशीलता को लेविस केवल उन देशों से ही सम्बद्ध करते हैं जो घनी आबादी वाले हैं तथा जहाँ पूँजी व प्राकृतिक साधनों की तुलना में जनसंख्या इतनी अधिक है कि उनकी अर्थ-व्यवस्थाओं में अधिकाँशतः "श्रम की सीमान्त उत्पादकता नगण्य, शून्य या ऋणात्मक पाई जाती है।" कुछ अर्थशास्त्रियों ने इस स्थिति को गुप्त बेरोजगारी (Disguised Unemployment) की संज्ञा दी है तथा मूलतः कृषि-क्षेत्र को गुप्त बेरोजगारी के प्रति उत्तरदायी पाया है।

(ii) श्रम की सीमान्त-उत्पादकता शून्य है या नगण्य—लेविस अपने मॉडल में इसे विशेष महत्त्वपूर्ण न मानते हुए, इस तथ्य पर अधिक बल देते हैं कि अर्द्ध-विकसित अर्थ-व्यवस्थाओं में श्रम का प्रति इकाई मूल्य निर्वाह-मजदूरी के स्तर पर होता है। अतः जब तक इस मूल्य पर श्रम-पूर्ति माँग से अधिक बनी रहती है, तब तक श्रम-पूर्ति को असीमित कहा जाता है। श्रम-पूर्ति की इस स्थिति में मजदूरी के वर्तमान स्तर पर निर्वाह क्षेत्र से श्रम को पूँजीवादी क्षेत्र में स्थानान्तरित करते हुए एक बड़ी सीमा तक नए उद्योग स्थापित किए जा सकते हैं तथा पुराने उद्योगों का विस्तार किया जा सकता है। श्रम की न्यूनता रोजगार के नए स्रोतों के निर्माण में किसी अवरोध (Constraint) का कार्य नहीं करती। कृषि, आकस्मिक श्रम, छोटे-मोटे व्यापारी, घरेलू सेवक, गृह-सेविकाएँ, जनसंख्या-वृद्धि आदि वे स्रोत हैं जिनसे निर्वाह-मजदूरी पर श्रम, पूँजीवादी क्षेत्र में स्थानान्तरित किया जा सकता है। किन्तु यह स्थिति अकुशल श्रम के लिए ही लागू होती है। जहाँ तक कुशल श्रम का प्रश्न है, समय विशेष पर किसी विशेष प्रकार के कुशल श्रम की पूँजीवादी क्षेत्र में कमी सम्भव है। कुशल श्रम के अन्तर्गत वस्तुकार, विद्युत कार्यकर्त्ता (Electricians), वैल्डर्स (Welders), जीव-विशेषज्ञ (Biologists), प्रशासक (Administrators), आदि आते हैं। लेविस के मतानुसार, कुशल श्रम का अभाव केवल आँशिक बाधा (Quasi-bottlenecks) है। प्रशिक्षण सुविधाएँ प्रदान करके अकुशल श्रम की इस बाधा को दूर किया जा सकता है। विकास या विस्तार के मार्ग में वास्तविक बाधाएँ (Real bottlenecks) पूँजी और प्राकृतिक साधनों का अभाव है। अतः लेविस के अनुसार जब तक पूँजी व प्राकृतिक साधन उपलब्ध हैं, आवश्यक कुशलताएँ (Necessary Skills) कुछ समयान्तर (Time-lag) से प्राप्त की जा सकती हैं।

Scanned by CamScanner

(iii) यदि श्रम असीमित पूर्ति में उपलब्ध है और पूँजी दुर्लभ है तो पूँजी का श्रम के साथ उस बिन्दु तक प्रयोग किया जाना चाहिए जहाँ श्रम की सीमान्त उत्पादकता मजदूरी के वर्तमान स्तर के समान रहती है। इसे चित्र—1 में दर्शाया गया है[1]—

चित्र–1

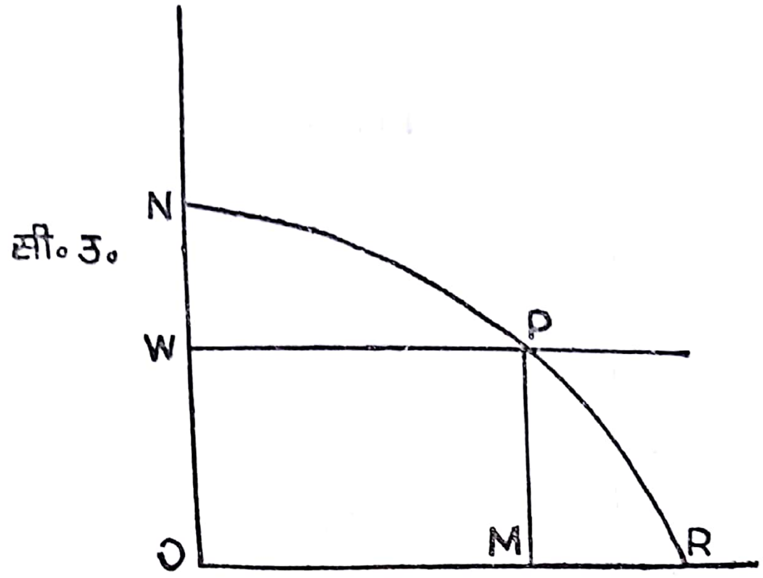

श्रम की मात्रा

उक्त चित्र में क्षितिजीय अक्ष पर श्रम की मात्रा तथा लम्बवत् अक्ष पर सीमान्त उत्पादकता की माप की गई है। पूँजी की मात्रा स्थिर (Fixed) है। *OW*=वर्तमान मजदूरी; *OM*=पूँजीवादी क्षेत्र में प्रयुक्त श्रम, *MR*=निर्वाह क्षेत्र में प्रयुक्त श्रम, *OR*=कुल श्रम, *OWPM*=पूँजीवादी क्षेत्रों में श्रमिकों की मजदूरी, *WNP*=पूँजीवादियों का अतिरेक (Capitalists Surplus) प्रकट करते हैं। यदि पूँजीवादी क्षेत्र से बाहर श्रम की सीमान्त उपयोगिता शून्य हो तो श्रम की *OR* मात्रा को रोजगार में रखा जाना चाहिए था, किन्तु पूँजीवादी क्षेत्र में श्रम की *OM* मात्रा को रोजगार देने पर ही लाभ कमाया जा सकता है। श्रम की इस मात्रा से पूँजीपति *OWPM* के बराबर मजदूरी देकर *ONPM* के बराबर आय अर्जित करते हैं, अतः दोनों का अन्तर (*ONPM-OWPM*)=*WNP* पूँजीपतियों का अतिरेक दर्शाता है। *M* से आगे की मात्रा निर्वाह-मजदूरी प्राप्त करती है।

(iv) पिछड़ी हुई अर्थ-व्यवस्थाओं में पूँजीपतियों को कुछ विशेष प्रकार के विनियोगों का अधिक अनुभव होता है—विशेषकर व्यापार व कृषि सम्बन्धी विनियोगों का तथा निर्माण-उद्योगों का अनुभव कम अथवा नगण्य होता है। परिणामतः ये अर्थ-व्यवस्थाएँ इस अर्थ में असन्तुलित (Lopsided) रहती हैं कि कुछ क्षेत्रों में अनुकूलतम से अधिक (More than optimum) तथा कुछ अन्य क्षेत्रों में अनुकूलतम से बहुत कम (Much less than optimum) विनियोग किया जाता है।

1 *Agrawal & Singh (Eds.)* : Economics of Under-development, p. 406.

Scanned by CamScanner

कुछ कार्यों के लिए वित्तीय संस्थाएँ (Financial Institutions) अत्यधिक विकसित होती हैं, जबकि दूसरी ओर कुछ महत्त्वपूर्ण क्षेत्र बच रहते हैं जिनको वित्तीय संस्थाओं का सहयोग नहीं मिल पाता है। व्यापार हेतु पूँजी सस्ती मिल सकती है, किन्तु गृह-निर्माण अथवा कृषि के लिए नहीं।

(v) लेविस के अनुसार निर्वाह-मजदूरी की तुलना में पूँजीवादी-मजदूरी 30 प्रतिशत या अधिक होती है। इस अन्तर के प्रभाव को चित्र-2 में प्रदर्शित किया गया है[1]—

चित्र–2

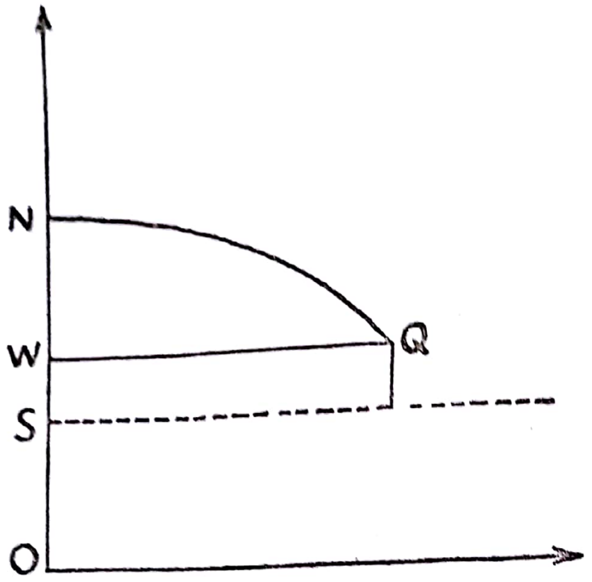

OS=निर्वाह क्षेत्र की प्रति इकाई आय।

OW=पूँजीवादी क्षेत्र की प्रति इकाई आय (वास्तविक)।

"समुद्र से उपमा लेते हुए कहा जा सकता है कि पूँजीपति-श्रम व निर्वाह-श्रम के मध्य प्रतिस्पर्द्धा की सीमान्त रेखा अब किनारे के रूप में नहीं, अपितु एक शिखर के रूप में प्रतीत होती है।"[2]

उपरोक्त अन्तर पर पूँजी-निर्माण निर्भर करता है। आर्थिक विकास की प्रक्रिया में सर्वाधिक महत्त्व इस तत्त्व का है कि पूँजीवादी अतिरेक का प्रयोग किस प्रकार किया जाता है। यदि इसका उपयोग नई पूँजी की उत्पत्ति के लिए होता है तो इसका परिणाम पूँजीवादी क्षेत्र का विस्तार होता है। निर्वाह क्षेत्र से हट कर अधिक संख्या में श्रमिक पूँजीवादी क्षेत्र की ओर आकर्षित होते हैं। इससे पूँजीवादी अतिरेक में और वृद्धि होती है तथा अतिरेक की अधिकता पूँजी-निर्माण की मात्रा

1 Ibid, p. 411.

2 "To borrow an analogy from the sea, the frontier of competition between capitalist and subsistence labour now appears not as a beach but as a cliff".
—Ibid, p. 412.

Scanned by CamScanner

को अधिक से अधिकतर करती जाती है। जब तक अतिरिक्त श्रम पूँजीवादी क्षेत्र में रोजगार प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक यह क्रम क्रियाशील रहता है। इस स्थिति को चित्र-3 में दर्शाया गया है[1]—

चित्र-3

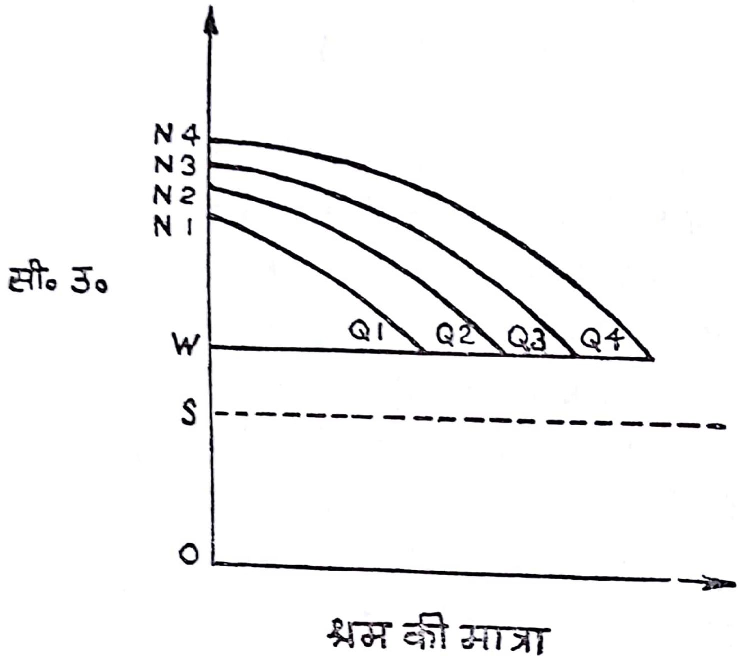

चित्र-2 के समान OS=निर्वाह-मजदूरी और OW=पूँजीवादी-मजदूरी। WN_1Q_1=प्रारम्भिक अतिरेक (Initial Surplus)। चूँकि इसका कुछ भाग पुनः विनियोजित कर दिया जाता है, जिससे स्थायी पूँजी की मात्रा में वृद्धि होती है और इसलिए उसकी सीमान्त उत्पादकता N_2Q_2 स्तर तक बढ़ जाती है। इस दूसरी स्थिति में अतिरेक व पूँजीवादी रोजगार दोनों अधिक हो जाते हैं। यह क्रम N_2Q_2 से N_3Q_3 तक तथा N_3Q_3 से N_4Q_4 तक और इसी प्रकार उस समय तक चलता रहता है, जब तक कि अतिरिक्त श्रम की स्थिति रहती है।

(vi) लेविस के मॉडल में पूँजी, प्रौद्योगिक प्रगति तथा उत्पादकता के सम्बन्धों की विवेचना की गई है। पूँजीवादी क्षेत्र के बाहर तकनीकी ज्ञान की प्रगति से मजदूरी का स्तर बढ़ता है, परिणामस्वरूप पूँजीवादी अतिरेक की मात्रा घटती है। किन्तु लेविस की यह मान्यता है कि पूँजीवादी क्षेत्र में ज्ञान-वृद्धि व पूँजी एक ही दिशा में इस प्रकार कार्य करते हैं कि मजदूरी में कोई वृद्धि नहीं होती है, बल्कि राष्ट्रीय आय में लाभों का अनुपात अधिक हो जाता है। नए तकनीकी ज्ञान के व्यावहारिक उपयोग के लिए नया विनियोग आवश्यक है। नया तकनीकी ज्ञान चाहे पूँजी को बचाने वाला हो, चाहे श्रम को, इससे उपरोक्त चित्र में प्रदर्शित स्थिति में कोई अन्तर नहीं आता है। लेविस के मॉडल में 'तकनीकी ज्ञान की वृद्धि और उत्पादक-पूँजी में वृद्धि' एक ही तत्त्व के रूप में माने गए हैं।

1 Ibid, p. 412.

Scanned by CamScanner

संरक्षण का समर्थन करने वाले ...

आलोचनात्मक समीक्षा

लेविस-मॉडल की समालोचना करने पर हमें इसमें बहुत सी कमियाँ दिखाई देती हैं, जिनमें प्रमुख निम्नलिखित हैं:—

1. प्रो. लेविस के सिद्धान्त का आधार अर्द्ध-विकसित देशों में असीमित मात्रा में श्रम की पूर्ति है, किन्तु दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका के कई देशों में ऐसी परिस्थितियाँ उपस्थित नहीं हैं अतः इस सिद्धान्त का क्षेत्र सीमित है।

2. लेविस के सिद्धान्त का आधार अर्द्ध-विकसित देशों में उपलब्ध पर्याप्त अकुशल श्रम शक्ति है। उनके विचार से कुशल श्रमिकों का अभाव एक अस्थायी अवरोध उपस्थित करता है जिसे श्रमिकों के प्रशिक्षण आदि के द्वारा दूर किया जा सकता है। किन्तु वस्तुतः पर्याप्त मात्रा में श्रम शक्ति के उचित प्रशिक्षण आदि में काफी समय लगता है और इस प्रकार कुशल श्रम शक्ति की कमी एक बड़ी कठिनाई उपस्थित करती है।

3. शुल्ट तथा लेवेन्सटीन यह नहीं मानते कि कम विकसित देशों में श्रम की सीमान्त उत्पादकता शून्य होती है। यदि ऐसा होता तो मजदूरी की दरें भी लगभग शून्य पर आ जाती। इसी कारण यह ज्ञात करना बड़ा कठिन है कि कितने लोग आवश्यकता से अधिक (Surplus) हैं।

4. लेविस-मॉडल को कार्यान्वित करने में एक मुख्य कठिनाई यह है कि 'अतिरेक या आवश्यकता से अधिक (Surplus) जनसंख्या' को शहरों में आसानी से नहीं ले जाया जा सकता। कम विकसित देशों में श्रम-शक्ति इतनी गतिशील नहीं होती जितनी विकसित देशों में होती है। जातीय और धार्मिक बन्धन, पारिवारिक मोह आदि के कारण व्यावसायिक गतिशीलता बहुत कम रहती है। भाषा, जनाभाव, आवासीय समस्या, निराशा, उत्साहहीनता, स्थान-विशेष से लगाव आदि के कारण भौगोलिक गतिशीलता बहुत कम पाई जाती है। कुशलता की कमी, प्रशिक्षण की कमी, अवसरों की असमानता आदि के कारण क्षैतिज (Horizontal) और खड़ी (Vertical) गतिशीलता भी कम रहती है।

5. आज के युग में अर्द्ध-विकसित अथवा कम-विकसित देशों में 'जीवन-निर्वाह' योग्य मजदूरी हर समय देते रहना सम्भव नहीं है। इसके अतिरिक्त 'सम्पूर्ण विकास क्रिया-काल' में श्रम जीवन-निर्वाह योग्य मजदूरी पर ही कार्य करने को कठिनाई से ही तैयार होता है। वह बढ़ती हुई महँगाई का मुआवजा माँगता है, लाभ में अपना हिस्सा चाहता है। 'न्यूनतम मजदूरी' से लेकर 'श्रम-कल्याण' के विविध महत्त्वपूर्ण नियम मजदूरों को संरक्षण देते हैं। अतः लेविस-मॉडल के अनुसार केवल 'जीवन-निर्वाह' के बराबर मजदूरी देते रहकर पूँजी-निर्माण द्वारा विकास

Scanned by CamScanner